जैनेन्द्र कुमार

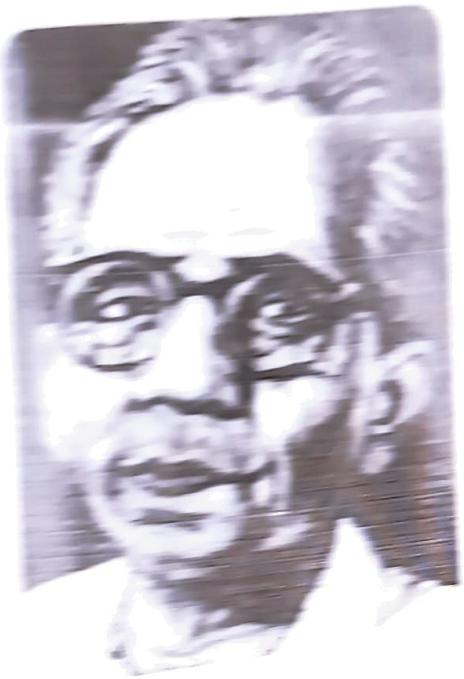

134

ISBN 978-93-91119-28-7
मूल्य : सात सौ पचास रुपये मात्र

पुस्तक	:	कालजयी साहित्यकार : जैनेन्द्र कुमार
संपादक	:	डॉ. दिग्विजय कुमार शर्मा, डॉ. विदुषी शर्मा
©	:	संपादक
प्रकाशक	:	वान्या पब्लिकेशंस 3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर - 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	2021
मूल्य	:	750/-
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रण	:	सार्थक प्रिंटर्स, कानपुर

Kaljayi Sahityakar : Jainendra Kumar

अनुक्रम

1. जैनेन्द्र के कथा-साहित्य में नारी की समस्याएं और समाधान
डॉ. दिग्विजय कुमार शर्मा 13
2. सुनीता : एक पुनर्विचार
डॉ. विजयेन्द्र नारायण सिंह 32
3. जैनेन्द्र कुमार का साहित्य : पृष्ठभूमि, प्रयास, प्रश्न और परिवार
प्रफुल्ल कोलख्यान 43
4. जैनेन्द्र के उपन्यास : स्त्री व्यक्तित्व की तलाश
डॉ. राजश्री शुक्ला 49
5. जैनेन्द्र की कहानियाँ : कथ्य और शिल्प की अंतरंगता
डॉ. सत्या उपाध्याय 55
6. भारत का मध्यवर्ग, हिन्दी कथा-साहित्य और जैनेन्द्र कुमार
डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे 61
7. मानव मन की गाँठों के विश्लेषक : कहानीकार जैनेन्द्र
डॉ. नीतू परिहार 65
8. सुखदा एक महत्वकांक्षिणी नारी की आत्मकथा
डॉ. बसुन्धरा उपाध्याय 70
9. जैनेन्द्र कुमार का चिन्तन और रचना का द्वैत
डॉ. भगवान सिंह 79
10. जैनेन्द्र के उपन्यासों की भाषा
डॉ. अमर बहादुर सिंह 85
11. जैनेन्द्र कुमार की साहित्यिक दृष्टि
डॉ. सुरेन्द्र शर्मा 96
12. औपन्यासिक परिदृश्य और मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार जैनेन्द्र कुमार
डॉ. उर्मिला पोरवाल 105
13. 'त्यागपत्र' में नारी-चेतना का स्वरूप
डॉ. नलिनी मिश्र 115
14. नारी हृदय की सार्थक प्रस्तुति है : जैनेन्द्र का त्यागपत्र
डॉ. साधना गुप्ता 121
15. जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों में अवचेतन की स्थिति
डॉ. बाबूलाल धनदे 128
16. कथाकार जैनेन्द्र और संबंधों का मनोविज्ञान
डॉ. रेखा 133
17. जैनेन्द्र कुमार के साहित्य में स्त्रियों की स्थिति
जितेन्द्र कुमार चन्द्राकर 139

7.
मानव मन की गाँठों के विश्लेषक : कहानीकार जैनेन्द्र

डॉ. नीतू परिहार

मनुष्य सामाजिक प्राणी है और कहानीकार समाज की संवेदनशील आत्मा है। अतः कहानी यथार्थ की प्रतिच्छाया है, स्वतः जीवन है और जीवन का अनुभव। कहानीकार, कहानी का तटस्थ दर्शक नहीं होता, बल्कि वह सचेत भोक्ता होता है। वह कहानी चित्रित ही नहीं करता वरन कहानी जीता है।

हिन्दी–साहित्य में जैनेन्द्र का स्थान बहुत ऊँचा है। प्रेमचंद के बाद सबसे बड़ा नाम जैनेन्द्र कुमार का है। जिस तरह प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानी–उपन्यास को कल्पना और मनोरंजन से निकालकर यथार्थ की भूमि पर ला खड़ा किया, उसी प्रकार जैनेन्द्र ने उन्हें मनुष्य की भीतरी दुनिया में लाकर प्रौढ़ता प्रदान की। उनके कथा–साहित्य का मूल उद्देश्य मानव–जीवन के सत्य को उद्‌घाटित करना था। उपन्यासों के समान ही उन्होंने अपने कहानी–साहित्य में भी असाधारण परिस्थिति में पड़े असाधारण व्यक्ति की मानसिक क्रियाओं–प्रतिक्रियाओं और अन्तर्द्वन्द्वों का मार्मिक विश्लेषण किया।

जैनेन्द्र ने अनेक कहानियाँ लिखी हैं। मोटे–तौर पर 1955 से 1966 के बीच पूर्वोदय प्रकाशन ने जैनेन्द्र की कहानियों को दस खण्डों में छापा था। जैनेन्द्र ने उस जमाने में कहानी लिखना शुरू किया, जब कहानी को एक खास दिशा की ओर ले जाने का प्रयास किया जा रहा था। इस बारे में गोविन्द मिश्र का कथन ध्यात्वय है। वे जैनेन्द्र की कहानियों के लिए कहते हैं–

"फैशन में पड़कर घिसे–घिसाये रास्ते से चलने की बजाय, जंगल में अपने लिए पगडंडी स्वयं बनाना–जो सर्जनात्मकता का यह रस और जोखिम उठाना चाहते हों, उनके लिए हैं जैनेन्द्र की कहानियाँ।"[1]

इस आलेख में जैनेन्द्र की कुछ कहानियों पर चर्चा की जा रही है। जैनेन्द्र की 'पत्नी' कहानी एक ऐसी स्त्री की कहानी है जो अपने क्रांतिकारी पति की गतिविधियों को चुपचाप देखती है। सुनन्दा के पति भारतमाता को स्वतंत्र करना चाहते हैं। वे और उनके मित्र स्वतंत्रता के लिए कटिबद्ध हैं। सुनन्दा के पति कालीचरण सुबह–सवेरे ही घर से निकल जाते हैं। भारतमाता को आजाद कराने के लिए दिन भर कोई–ना–कोई चर्चा चलती रहती है।